INDIAN SCHOOL MUSCAT PRIMARY SECTION		
Story No: 1 & 2	Name:	
Resource Person: Ms.Deepa R	STD: IV	Sec:

हम एक हैं इसलिए नेक हैं

एक बहुत घना जंगल था। उस जंगल में तरह-तरह के पेड़ थे। ढेर सारे पेड़ फलों और फूलों से लदे थे। इन पेड़ों के साथ-साथ जंगल में कई जानवर भी रहते थे।

एक दिन इमली के पेड़ ने आम के पेड़ से पूछा-"क्या इमली खाओगे?"आम के पेड़ ने हँसकर कहा- "भाई, हम लोग अपने फल तो खा नहीं पाते। हमारे फल तो मनुष्य खाते हैं और जानवर भी खाते हैं। फिर इमली कैसे खाऊँ? मनुष्यों को देखते ही डर के मारे मेरे तो पत्ते हिलने लगते हैं। ये हमारे फल तो खाते ही हैं और फिर हमें ही आरी से काट डालते हैं। भाई, आखिर हमने इनका क्या बिगाड़ा है?"

इमली का पेड़ चुपचाप सुनता रहा। इतने में उस जंगल से एक-दो ट्रक निकले। उनके धुएँ से आम के पेड़ को खाँसी आ गई और वह ज़ोर-ज़ोर से खाँसने लगा।

खुशबूदार चंदन का पेड़ बोला-"देखो भाई, मनुष्य हमारे ऊपर रोज़ गंदा-गंदा धुआँ छोड़ते जाते हैं इसलिए हमारे बच्चे जल्दी बड़े नहीं हो पाते हैं, बीमार हो जाते हैं और कुछ तो मर भी जाते हैं। हम इन्हें खुशबू देते हैं और लकड़ी भी देते हैं लेकिन ये लोग हमें पानी तक नहीं देते। वो तो भला हो बादलों का जो हमें पानी दे देते हैं!"

इन पेड़ों की बात नीचे खड़े जानवर सुन रहे थे। उन सब जानवरों ने मिलकर कहा-"अरे भाई! डरो मत। हम तो तुम्हारे दोस्त हैं। अब हम इन मनुष्यों से तुम्हारी रक्षा करेंगे। तुम हमें छाया देते हो,खाने के लिए पत्तियाँ और फल देते हो। हम भी दोस्ती निभाएँगे।"जानवरों की यह बात सुनकर सभी पेड़ प्रसन्न हो गए।

अब सब जानवर जंगल की रक्षा करने लगे। जब भी आदमी जंगल में पेड़ों को काटने आते तो सभी जानवर चुपचाप उनपर नज़र रखते। फल, पत्तियाँ और लकड़ी बीननेवालों से तो वे कुछ नहीं कहते परंतु आरी, कुल्हाड़ी वाले मनुष्यों को देखते ही उन्हें जंगल से बाहर खदेड़ देते।

इधर पेड़ अपने फल धरती पर गिराते। बादल पानी बरसाते। फल फिर से छोटे-छोटे पेड़ बनकर बड़े-बड़े वृक्ष बन जाते। इस तरह जंगल पहले की तरह हरा-भरा हो गया। पेड़-पौधे और जानवर,सभी मिल-जुलकर रहने लगे। वे जब भी मिलते तो यही कहते-"हम एक हैं इसलिए नेक हैं।"

सूझ-बूझ से सुलझा ले समस्या

एक किसान था, वह अपने खेतों में काम कर घर लौट रहा था। रास्ते में ही एक हलवाई की दुकान थी। उस दिन किसान ने कुछ ज़्यादा काम कर लिया था और उसे भूख भी बहुत लग रही थी। ऐसे में जब एक हलवाई की दुकान के पास से गुज़रा तो उसे मिठाइयों की खुशबू आने लगी। वह खुद को रोक नहीं पाया लेकिन उस दिन उसके पास ज़्यादा पैसे नहीं थे, ऐसे में वह मिठाई खरीद नहीं सकता था तब वह कुछ देर वहीं खड़े होकर मिठाइयों की सुगंध का आनंद लेने लगा।

जब मिठाईवाले ने किसान को मज़े से उसकी दुकान की मिठाइयों की खुशबू का आनंद लेते देखा तब उससे किसान की खुशी देखी नहीं गई वह किसान के पास गया और बोला -"पैसे निकालो।"किसान हैरान हुआ और बोला-" मैंने तो मिठाई नहीं खरीदी और न चखी है फिर पैसे किस बात के?"हलवाई बोला-"भले ही तुमने मिठाई नहीं ली हो लेकिन मेरी बनाई मिठाई की खुशबू का आनंद तो लिया है। मिठाई की खुशबू लेना मिठाई खाने के बराबर ही है तो तुम्हें अब इसके पैसे देने होंगे।"

किसान पहले थोड़ा घबराया, लेकिन फिर थोड़ी सूझ-बूझ दिखाते हुए उसने अपनी जेब से कुछ सिक्के निकाले और उन्हें दोनों हाथों के बीच में डालकर खनकाया। अब खनकाने के बाद किसान अपने रास्ते जाने लगा।

हलवाई बोला-"मेरे पैसे तो दो!"किसान ने कहा-"जैसे मिठाई की खुशबू का आनंद लेना मिठाई खाने के बराबर है वैसे ही सिक्कों की खनक सुनना भी पैसे लेने के बराबर ही है।"

सीख ः सूझ-बूझ से हर समस्या सुलझाई जा सकती है।